# "मुरादाबाद मण्डल के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के नैतिक मूल्यों का अध्ययन"

**गीता अरुण**
शोधार्थिनी

**डा0 राकेश कुमार आजाद**
प्रोफेसर एवं प्राचार्य
एस0एस0कॉलेज,
शाहजहाँपुर

**सारांश**

शिक्षा बालक की सर्वांगीण विकास का सर्वोत्कृष्ट साधन है। उसके व्यक्तित्व के पूर्ण विकास का सोपान है। शिक्षा बालक में अन्तर्निहित शक्तियों को उभारकर उन्हें पूर्ण विकसित करती है। यह वह ज्ञान है जो बालक रुपी हीरे की क्रश्मन रुपी बुराइयों को दूर कर उसके आन्तरिक गुणों को जगमगा देती है, जिसके प्रकाश में बालक स्वयं अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है और समाज को भी लाभ पहुँचाता है। शिक्षा बालक के व्यवहार का परिष्कार करती है। यह परिष्कार बालक और समाज दोनों के लिए उपयोगी होती है। जान डीवी और महात्मा गाँधी के अनुसार शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। माता–पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे प्रदर्शन की उतनी ऊँची सीढ़िया चढ़े जितना सम्भव है। उच्च स्तर की प्राप्ति की आशा माता–पिता व बच्चों पर अत्यधिक दबाव डालती है। यहाँ तक की ऐसा प्रतीत होता है कि शिक्षा की समस्त कार्यप्रणाली से अन्य प्रतिक्रियाओं की आशा की जाती है। नैतिक मूल्यों का महत्व मानव संघर्ष, न्याय, उद्धार, समाजिक सद्भाव और सामरिकता को समर्थन करने में होता है। ये मूल्य सद्भावना, अनुशासन और संयम के माध्यम से एक समृद्ध समाज की नींव होते हैं। नैतिक मूल्यों का पालन करना व्यक्ति को ईमानदार, संवेदनशील, समझदार और समर्पित बनाता है। इसके अलावा, नैतिक मूल्यों का पालन व्यक्ति के आपसी संबंधों, परिवार, समाज और संगठनों में सद्भावना, समरसता और सामरिकता का निर्माण करता है। शोध से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए – मुरादाबाद मण्डल के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाली शहरी क्षेत्र की छात्राओं के नैतिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया, मुरादाबाद मण्डल के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाली ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

**मुख्यशब्द** – उच्च माध्यमिक स्तर, छात्राओं, नैतिक मूल्य

## • प्रस्तावना

शिक्षा की प्रक्रिया में बालक अब एक सक्रिय कार्यकर्ता माना जाता है। पहले उसका स्थान एक निष्क्रिय श्रोता के रुप में था, किन्तु यह शिक्षा–प्रणाली दोषपूर्ण थी। आज विद्यार्थी को बहुत सी बाते सीखनी होती है। अध्यापक तो एक सहायक और पथ–प्रदर्शक के रुप में होता है वह नियम बनाने वाली मशीन नहीं होता। अध्यापक का व्यवहार बालकों के प्रति रुष्ट न होकर मित्र की तरह मृदुल और सहानुभूतिपूर्ण होता है। अध्यापक का कर्तव्य बालकों के सामने ऐसी समस्याओं को प्रस्तुत करता है। जिनके हल करने में बालक सक्रिय बना रहता है और आनन्द प्राप्त करता है। शिक्षा बालक को नये–नये अनुभवों से अवगत कराती है तथा वातावरण से सामजस्य स्थापित करने में सहायता देती है। शिक्षा स्वभाव से ही गतिशील है तथा सीखने आदि की क्रियाओं से बालक की ज्ञानभिवृद्धि करती है। शिक्षा को दो ध्रुवीय प्रक्रिया कहा जाता है जिसमें शिक्षक सिखाता है और विद्यार्थी सीखता है। शिक्षक निर्देशन करता है तो छात्र उसको गृहण करता है। शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक तथा छात्र दोनों के बीच परस्पर आदान–प्रदान होता है। शिक्षक अपने व्यक्तित्व तथा ज्ञान के विभिन्न अंगों के प्रभाव से छात्र के व्यवहार में परिवर्तन तथा सुधार करता है। जिससे वह सम्यक विकास की ओर अग्रसर होता है। छात्र को विद्याथी, शिक्षार्थी और शिष्य आदि नामों से जाना जाता है। शिक्षा के द्वारा ही बालक धर्म, राज्य समुदाय, सभ्यता और संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करता है जिससे उसमें राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक तत्व एवं अनिवार्य घटक ''समाज के साथ समायोजन'' की क्षमता का विकास होता है। लेकिन यह तभी सम्भव है जब बालक शारीरिक और मानसिक रुप से स्वस्थ हो। अर्थात् शारीरिक और मानसिक रुप से उसमें शिक्षा ग्रहण करने की क्षमता हो क्योंकि एक स्वस्थ व्यक्ति ही अपने जीवन, समाज और राष्ट्र के प्रति पूर्ण योगदान कर सकता है। भारत में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था अनेक समस्याओं से ग्रस्त है। अनुशासनहीनता और शिक्षकों का उत्तरदायित्व कम ही हो रहा है। एक वास्तविक आदर्श शिक्षक वही होता है जो एक शिक्षक विद्यार्थी की आवश्यकता, क्षमता रुचि, योग्यता, विशेषता आदि को ध्यान में रखकर शिक्षा प्रदान करता है। प्रजातंत्रात्मक देशों में स्त्री शिक्षा को सामाजिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। इस शासन प्रणाली को सुदृढ़ बनाने के लिए पुरुषों के समान स्त्रियों को भी समान अधिकार दिये जाते हैं और विकास के लिए समान सुविधायें प्रदान की जाती है। भारत में सदैव नारियों को सम्मान दिया जाता रहा है। शिक्षित नारी ही परिवार व समाज के विकास में सहायक होती है। मनु ने ठीक ही कहा है ''यंत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता''। जहाँ नारियों की पूजा होती है, वही देवताओं का निवास माना जाता है। दुर्गा सप्तशती में भी कहा गया है कि ''कुपुत्रों जायेत् क्वचिदपि कुमाता न भवति'' अर्थात् कुपुत्र पैदा हो सकता है किंतु माता, कभी भी कुमाता नहीं हो सकती। स्त्री देश की संस्कृति, धर्म, साहित्य, ज्ञान एवं विज्ञान की आधारभूत स्तंभ होती है। नारी ने विभिन्न रुपों में अपने महत्व को सदैव प्रदर्शित किया है। माता के रुप में वह भावी नागरिकों का निर्माण करती है। बालक का सर्वप्रथम समाजीकरण माता के

सानिध्य से ही प्रारम्भ होता हे। यदि स्त्री शिक्षित नहीं है तो वह अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वहन उचित रुप में नहीं कर सकेगी। सुयोग्य स्त्रियां सदैव ही पुरुषों के समकक्ष अपने महत्व को स्थापित करती है। ज्ञानपीठ पुरुस्कार विजेता महान् कवयित्री महादेवी वर्मा ने माता कि स्थिति को वर्णित करते हुए कहा है – ''वह रोता था, मै रोती थी, मैं हँसती थी; वह सोता था, मैं सोती थी, वह सूखा था, मै गीली थी, अंतर बस केवल इतना था, वह बेटा था; मैं माता थी। भारतीय इतिहास के विभिन्न कालों पर जब हम स्त्रियों की दशा, उनकी शैक्षिक स्थिति पर दृष्टि डालते हैं तो उनके विभिन्न रुप प्राप्त होते हैं। प्राचीन भारतीय इतिहास में स्त्री को पुरुषों के समान शिक्षा देने की परम्परा थी। इस काल में नारियों की दशा तो सम्मानजनक थी, शिक्षा भी देने की परम्परा थी परन्तु यह शिक्षा अनौपचारिक रुप में ही अधिक दृष्टिगत होती है। प्राचीन काल पुरुष प्रधान होने के कारण पुरुष की शिक्षा की अधिक दृष्टिगत होती है। कतिपय साहित्य में स्त्रियों के गुरुकलों में शिक्षा प्राप्त करने का उल्लेख भी प्राप्त होता है। प्राचीन काल की विदुषी महिलाओं में अपाला, घोषा, गार्गी, विश्वावारा, लोपामुद्रा आदि नाम उल्लेखनीय है। उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं के नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए कुछ महत्वपूर्ण उपाय हैं। इनमें से कुछ शामिल हैं : स्वयं उच्च मानवीय मानदंडों का पालन करना, अच्छे आदर्शों का पालन करना और एक ईमानदार और न्यायप्रिय जीवन जीने का प्रयास करना, संवेदनशीलता और समाज सेवा में योगदान करने के लिए प्रोत्साहित करना, सही और गलत के बीच विचार करने का कौशल विकसित करना, ईमानदारी, न्याय, संयम और सामरिक भावना के प्रतीक रूप में स्वयं को साबित करना, अच्छी आदतों को विकसित करने के लिए आदर्श गुरुओं के साथ मिलकर काम करना, दूसरों की सम्मान करने और सहायता करने की आदत बनाना।

## • आवश्यकता एवं महत्व

आधुनिक परिवर्तनशील युग में शिक्षा समाज में परिवर्तन लाने का मुख्य अस्त्र है, कोई भी व्यक्ति शिक्षा के माध्यम से ही अपना सर्वांगीण विकास कर सकता है। शिक्षक की सहायता के बिना शिक्षण प्रक्रिया को सफल नहीं बनाया जा सकता है। शिक्षण की सम्पूर्ण प्रक्रिया को सफल बनाने के लिए शिक्षक और शिक्षार्थी में उपयुक्त सम्बंध होना अति आवश्यक है। शिक्षण को सफल बनाने के लिए ही शिक्षक के प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है। एक कुशल एवं प्रशिक्षित अध्यापक ही अपनी शिक्षा के माध्यम से अपने छात्रों का उचित मार्गदर्शन कर सकता है। शिक्षा से प्राप्त ज्ञान के ही द्वारा व्यक्ति अपने जीवन के सभी अंगों का उचित विकास कर सकता है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति अपने जीवन का यथार्थ समझ सकता है और उसे मोक्ष प्राप्त करने में भी सहायता मिलती है। शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है। शिक्षा के तीन प्रमुख अंग हैं – शिक्षक, शिक्षार्थी और विषय सामग्री, जिनमें शिक्षक का प्रमुख स्थान है। शिक्षक के बिना ज्ञानार्जन सम्भव नहीं है। अध्यापक ही शिक्षण प्रक्रिया को सही दिशा को ओर मुखरित कर सकता है। अध्यापक बालकों की अनेक समस्याओं का

निराकरण कर सकता है। इसलिए शिक्षक राष्ट्र का निर्माता माना जाता है। यह सर्वाविदित तथ्य है कि प्रत्येक मानवीय ईकाई का कार्य लक्ष्यपरक एवं उसके निमित्त महत्वपूर्ण होता है। अतः समस्याओं का उदय मानवीय आवश्यकताओं से होता है तथा समाधान का सम्बन्ध आवश्यकता की पूर्ति से होता है। इसलिए कहा गया है कि आवश्यकता अविष्कार की जननी होती है। मनुष्य की चाहे जो क्रिया हो लेकिन उस क्रिया का संचालन व संपादन आवश्यकता पर आधारित होता है। उक्त दार्शनिक सूत्र अक्षरशः इस शोध संकल्पना पर भी लागू होता है। उत्तरप्रदेश में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में सी0बी0एस0ई0, आई0सी0एस0ई0, यू0पी0बोर्ड और गुरुकुल विद्यालय आते हैं। इन विद्यालयों में कुछ विद्यालय सहशिक्षा के होते हैं और कुछ विद्यालय केवल बालिका विद्यालय होते हैं। सभी अपने तरीके से मूल्य शिक्षा भी प्रदान करते हैं। प्रस्तुत शोध के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया जायेगा कि मुरादाबाद मण्डल के उच्च माध्यमिक स्तर के विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं के अन्दर नैतिक मूल्य कितने हैं। यह शोध इस दृष्टि से बहुत ही प्रभावशाली होगा कि उच्च माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाली छात्राओं में कितने नैतिक मूल्य हैं और एक आदर्श जीवन जीने के लिए नैतिक मूल्यों का कितना बड़ा योगदान होता है।

## • प्रस्तुत शोध विषय पर निम्न शोधार्थियों ने शोध किये है

चावला और शिशोदिया (2014) संदीप कौर (2015) सरिता (2015) उपाध्याय (2015) कनिका (2016) पिटेल, स्टीफन और मेंडेलसोहन, जेराल्ड (2016) आदि।

## • समस्या कथन

**मुरादाबाद मण्डल के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के नैतिक मूल्यों का अध्ययन**

## • चरों का परिभाषीकरण

- **उच्च माध्यमिक स्तर** – माध्यमिक स्तर के बाद उच्च माध्यमिक स्तर में बच्चा प्रवेश लेता है। जिसमें वह कक्षा 11 एवं 12 का अध्ययन करता है। कक्षा 11 व 12 में माध्यमिक स्तर से अलग विषय भी विद्यार्थी ले सकता है। सामान्य रुप से इनको इण्टर कॉलेज के नाम से भी जाना जाता है।
- **छात्राऐं** – उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राएं हाई स्कूल छात्राएं कहलाती हैं। उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं के लिए कुछ सामान्य सुझाव : पढ़ाई में निरंतरता बनाए रखें। नियमित रूप से अध्ययन करें और पाठशाला के निर्देशों का पालन करें, अच्छी स्वास्थ्य बनाए रखें। समय–समय पर व्यायाम करें, सही खान–पान करें और पर्याप्त आराम लें, अपने अध्ययन को व्यवस्थित करें। नोट्स बनाएं, महत्वपूर्ण तथ्यों को समय–समय पर दोहराएं और प्रैक्टिस टेस्ट सॉल्व करें, समय प्रबंधन को महत्व दें। एक निर्धारित अवधि में प्रत्येक विषय के लिए समय निर्धारित करें और इसे पालन करें, सवालों का अभ्यास करें।

अभ्यास करने के लिए प्रश्न–पत्रों का अभ्यास करें और मॉडल प्रश्न पेपर्स सॉल्व करें, अपने दोस्तों और अध्यापकों से मदद लें। यदि किसी विषय में समझ नहीं आ रही है, तो उसे समझने के लिए अध्यापकों से सहायता लें और अपने दोस्तों के साथ अध्ययन समय बिताएं, आत्मविश्वास बनाए रखें और स्वयं को मोटिवेट करें। सकारात्मक सोच विकसित करें और अपने लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्ध रहें, नियमित रूप से मॉडल पेपर्स और पिछले वर्षों के प्रश्न पत्रों का समाधान करें। इससे परीक्षा के पैटर्न को समझने में मदद मिलेगी और आपकी प्रैक्टिस भी होगी। याद रखें, सफलता के लिए मेहनत, संयम और निरंतर अभ्यास आवश्यक होते हैं। अपने लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्ध रहें और निरंतर प्रयास करते रहें। आप इस माध्यमिक स्तर को पार करने में सफल होंगी।

- **नैतिक मूल्य –** नैतिक मूल्य व्यक्ति के आचार, विचार, नैतिकता और संबंधों के मानकों को संकेत करता है। यह विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं में निर्धारित किए जाने वाले आदर्शों, नियमों और मूल्यों का प्रतिबिंब है। नैतिक मूल्यों में समानता, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, धैर्य, दया, सहयोग, सच्चाई, न्याय, उच्चता, अनुशासन और स्वधर्म सम्मिलित हो सकते हैं।

## • शोध अध्ययन के उद्देश्य

- मुरादाबाद मण्डल के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाली शहरी क्षेत्र की छात्राओं के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।
- मुरादाबाद मण्डल के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाली ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

## • शोध अध्ययन की परिकल्पनायें

- मुरादाबाद मण्डल के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाली शहरी क्षेत्र की छात्राओं के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- मुरादाबाद मण्डल के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाली ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

## • न्यादर्श

वर्तमान शोध हेतु मुरादाबाद मण्डल के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् 60 छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया जायेगा।

- **शोध विधि**

प्रस्तुत शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा।

- **उपकरण**

➢ नैतिक मूल्य मापनी – सुरभि अग्रवाल द्वारा निर्मित।

- **परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या**

**तालिका संख्या – 1**

**मुरादाबाद मण्डल के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाली शहरी क्षेत्र की छात्राओं के नैतिक मूल्यों का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या**

| समूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | क्रान्तिक अनुपात |
|---|---|---|---|---|
| हिन्दी माध्यम | 60 | 103.14 | 22.74 | 2.41 |
| अंग्रेजी माध्यम | 60 | 108.15 | 21.12 | |

**व्याख्या** – तालिका संख्या–1 में मुरादाबाद मण्डल के हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाली शहरी छात्राओं के नैतिक मूल्यों का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात को दर्शाया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि हिन्दी माध्यम में अध्ययन करने वाली शहरी छात्राओं का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 103.14 (22.74) प्राप्त हुआ है जबकि अंग्रेजी माध्यम में अध्ययन करने वाले शहरी छात्राओं का नैतिक मूल्यों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 108.15 (21.12) प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 2.41 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान सार्थकता के दोनों स्तरों 0.01 और 0.05 से ज्यादा है जो यह दर्शाता है कि मुरादाबाद मण्डल के हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाली शहरी छात्राओं के नैतिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

**तालिका संख्या – 2**

**मुरादाबाद मण्डल के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाली ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के नैतिक मूल्यों का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या**

| समूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | क्रान्तिक अनुपात |
|---|---|---|---|---|
| हिन्दी माध्यम | 60 | 105.09 | 16.22 | 1.29 |
| अंग्रेजी माध्यम | 60 | 103.55 | 18.65 | |

**व्याख्या** – तालिका संख्या–2 में मुरादाबाद मण्डल के हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाली ग्रामीण छात्राओं के नैतिक मूल्यों

का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात को दर्शाया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि हिन्दी माध्यम में अध्ययन करने वाली ग्रामीण छात्राओं का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 105.09 (16.22) प्राप्त हुआ है जबकि अंग्रेजी माध्यम में अध्ययन करने वाले ग्रामीण छात्राओं का नैतिक मूल्यों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 103.55 (18.65) प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 1.29 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान सार्थकता के दोनों स्तरों 0.01 और 0.05 से कम है जो यह दर्शाता है कि मुरादाबाद मण्डल के हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाली ग्रामीण छात्राओं के नैतिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

## • निष्कर्ष

- मुरादाबाद मण्डल के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाली शहरी क्षेत्र की छात्राओं के नैतिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया।
- मुरादाबाद मण्डल के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाली ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

## • सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


अस्थाना, विपिन : मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, (1994)।

कपिल, एच.के : सिंह पोस्ट ग्रेज्यूएट कॉलेज, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, (1999)।

कपिल शिबा : ''अनुसंधान विधि शास्त्र'' दूरस्थ शिखा विभाग, आई0ए0एस0ई0 विश्वविद्यालय, सरदारशहर, चुरु सन् (2004)।

गैरेट, हैनरी, ई. : 'शिक्षा मनोविज्ञान में सांख्यिकी' कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, (1995)।

महफूज सना हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन शोध विषय पर लघु शोध प्रबन्ध (2017)।

सिंह डी.पी. एवं वाजपेयी प्रभा : ''विद्यालय प्रबन्ध एवं शिक्षा की समस्याएँ, रिसर्च पब्लिकेशनस्, जयपुर, 2002।

सुखिया एम.पी. एवं मल्होत्रा, पी.वी. : शैक्षिक अनुसन्धान के मूल तत्व विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, (1994)।